

भाखल दरिया साहेब सत सुकृत बन्दी छोड़ मुक्ति के दाता नाम निशान सही।

ग्रन्थ रामेश्वर गोष्ठी

(गोष्ठी दरिया साहब और रामेश्वर पंडित से काशी में अस्सीवरना के तीर)

रामेश्वर वचन

गोफा सोफा में आसन मंडे शुन्य में ध्यान लगावे।
 आतम साधि पवन जो पीवे, योनि संकट नहीं आवे॥
 यह मत जाना ब्रह्म दिढ़ाना, सोई सिद्ध कहावे।
 कर्म योग बिनु युक्ति न पावे, सतगुरु शब्द लखावे॥
 वाय बिन्दु ले गगन समाना, त्रिकुटी है स्थाना।
 शास्त्र गीता यह मन भाषे, सोई शब्द परमाना॥
 रोम-राम सींचे जो जोगी, अमृत झरि जब आवे।
 कहे रामेश्वर सुनो स्वामी, तब वा पद के पावे॥

दरिया वचन

का गोफा सोफा में पैटे, का तारी के लावे।
 का आसन बासन के बाँधे, का भौ पवन चढ़ावे॥
 का आतम के जारे मारे, का भौ त्रिषा मिटाये।
 जब लगी युक्ति जानि नहीं आवे, का भौ योग कमाये॥
 का श्रृंगि शेली के डारे, क्या मुख टेरि सुनावे।
 क्या नाँचे झालर झनकारे, क्या मृदंग बजावे॥
 झिली मिली झगरा झूठा झूलते, औँधा ध्यान लगावे।
 कहे 'दरिया' सुनो ज्ञान रामेश्वर, जग में जीव जहड़ावे॥

रामेश्वर वचन

सनकादिक सुकदेव जो कहिए, जाको ब्रह्म दृढ़ाना।
 अखंडित ब्रह्म अगोचर अविगति, एहि ठहराना॥
 बशिष्ठ ज्ञान जो श्रेष्ठ जगत में, औ मुनि बहुत बखाना॥
 जाकी बचन अमर है युग-युग, निरालेप निर्बाना॥
 एके ज्योति सकल घट व्यापक, अद्वैत ब्रह्म कहावे।
 अगम अपार पार नहीं पावे, निगम नेति जेहि गावे॥
 चार वेद ब्रह्मा मुख भाषा, ब्यासहिं ग्रंथ बनाई।
 कहे रामेश्वर सुनो स्वामी, या छोड़ि दुजा ना गाई॥

दरिया वचन

हरिहर ब्रह्मा और त्रिपुरारी, बहुते योग कमाते ।
 नवो नाथ चौरासी सिध्या, गोरख पवने खाते ॥
 इंगला पिंगला सुखमनि जाने, मेरु दण्ड के साथे ।
 बंकनाल की डोरी घैंचि, उलटि द्वादस बाँधे ॥
 मारकण्डे और शंकर योगी, जग में प्रगटे ज्ञाना ।
 मुनि बशिष्ठ राम के गुरु, उन्ह भी ज्ञान बखाना ॥
 वेद गर्व ते पंडित भूला, आपु मर्म नहीं जाना ।
 एहु जीव जहड़ायो जग में, पढ़ि पढ़ि वेद पुरान ॥
 ज्योति स्वरूपी जाके कहिए, करे जीवन को घाता ।
 दान पुण्य बलि राजे किन्हा, बाँध पताले चाँता ॥
 उत्पत्ति प्रलय या जग करई, सो मन चाहे हाँथा ।
 मृतक अंध नजर नहीं आवे, रहे सबन के माथा ॥
 जग लागि मन परिचय नहीं पावे, किमि उतरे भव पारा ।
 कहे 'दरिया' सुनो ज्ञान रामेश्वर, करि लेहु शब्द बिचारा ॥

रामेश्वर वचन

खेचरी भोचरी चँचरी, अगोचरी यह योगी जब पावे ।
 इंगला पिंगला सुषमनि घाटे, अष्टदल कमल दृढ़ावे ॥
 पाँच तत्व की बाती लेसे, परम ज्योति परकासा ।
 शुन्य मंदिर में मुद्रा जागे, कर्म भर्म सब नासा ॥
 नाद बिन्द जाके घट जरई, सहज समाधि लगावे ।
 आपुहिं गुरु आप हैं चेला, कहु काको गुन गावे ॥
 आपन अन्त पावे जब जोगी, कौन, बूडे को तरई ।
 कहे रामेश्वर सुनों स्वामी, यह पद निश्चय धरई ॥

दरिया वचन

खेचरी भोचरी चँचरी अगोचरी, झिलि मिलि मुद्रा त्यागे ।
 छोड़ पपिलक गहे विहंगम, उन्मुनि मुद्रा जागे ॥
 छव चक्र काया प्रगट है, वाका भेद जो पावे ।
 शब्द सजीवन हैगा मूला, काया अग्र, झलकावे ॥
 बरे दृष्टि करे उजियारा, शुन्य गगन में पेखे ।
 जाके सतगुरु पूरा मिलिया, सोई शब्द वह देखे ॥
 बाहर भीतर एके लेखा, हनै शब्द निशाना ॥

कस्तुरिया नाभी में बासा, मृगा मर्म न जाना ॥
जहाँ नहिं तहाँ सब ढूँढे, परे फूही औ घाना ।
कहे 'दरिया' सुनो ज्ञान रामेश्वर सुनि लेहु शब्द निशाना ॥

रामेश्वर वचन

राम कृष्ण वोय आदिहिं कहिए, जल थल जीव बनाया ।
योगी यति तपे संन्यासी, मुनि सब ध्यान लगाया ॥
सनकादिक ब्रह्मादिक कहिए, अचल पद के लागे ।
अनन्त युग की एही महिमा, शिव समाधि में जागे ॥
नौ नाथ चौरासी सिध्या, सब मिलि गुण जरे गाया ॥
निरालेप निरंजन कहिए, अच्युतानन्द कहाया ॥
यह मत जाना ब्रह्म दृढ़ाना, पूरा सिद्ध कहावे ।
कहे रामेश्वर सुनो स्वामी, बहुरि न भव जल आवे ॥

दरिया वचन

सतपुरुष जो आपहिं कहिए, राम कृष्ण नहिं तहिया ।
एक से आदि अनन्त होय आये, सृष्टि रचा है जहिया ॥
सनकादिक ब्रह्मादिक कहिए, उन्ह भी अन्त न पाया ।
योगी यति तपे संन्यासी, रोय रोय जनम गँवाया ॥
शिव समाधि जो युग-युग किन्हा, आदि मर्म नहिं जाना ॥
वोये कर्ता यह कृतम कहिए, माया मोह भगवाना ॥
बादि किये मिले नहिं साहब, बादि करे सो झूठा ।
जब लगि सत्त शब्द नहिं पावे, काल कर्म नहिं छूटा ॥
जंगम योगी पंडित ज्ञाता, निराकार ठहराई ॥

साखी

जंगम योगी सेवड़ा, परे काल के हाँथ ।
कहे 'दरिया' सोई बाचि हैं, जो सतनाम के साथ ॥
निसाचर निशा चरत है, निसा काल स्वरूप ॥
दिन दिवाकर छबि देखिए, ब्रह्म सो विमल अनूप ॥
मथुरा मन के मथिए, औ मथनी करु गुरु ज्ञान ॥
कंज पुंज झलकत रहे, देखो अर्ध अमान ॥
मथुरा वह जनि जानहु, सतगुरु का उपदेश ॥
दिल 'दरिया' दर्शन देखो, तब मेटिहें कवलेश ॥

ग्रन्थ रामेश्वर गोष्ठी पूर्ण